लिविंग टेड्डी एलिफेंट

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

"ट्रिन-ट्रिन!" घंटी की आवाज़ के साथ ही रानू और शानू की दौड़ शुरू हो गई। रोज़ की तरह, जो पहले दरवाज़ा खोलेगी, उसे डैडी से चॉकलेट मिलेगी। आज रानू जीत गई। उसने दरवाज़ा खोलकर जोर से कहा, "डैडी, मेरी चॉकलेट!"

लेकिन डैडी के हाथ पीछे छिपे थे और उनके चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी। "आज चॉकलेट नहीं, बल्कि एक ऐसा तोहफा है जो हर चॉकलेट से मीठा है," उन्होंने कहा और हाथ आगे बढ़ाए। उनकी हथेली में गणेश जी की एक सुंदर, मुस्कुराती हुई मूर्ति थी।

“डैडी! हमने ये कब माँगी?” शानू ने पूछा।

डैडी हँसे, “तुम दोनों हमेशा भाई माँगती थीं। कल राखी है ना? लो, ये रहे तुम्हारे भैया गणेशा!” अगले दिन, सुबह से ही बहुत धूमधाम रही। रानू और शानू ने गणेश जी की मूर्ति को नहलाया, एक छोटा-सा मुकुट पहनाया और नए कपड़े सजाए। उन्होंने उनका तिलक किया, राखी बाँधी और मीठे-मीठे लड्डू खिलाए। वह छोटी-सी मूर्ति उन्हें अपना सच्चा भाई लगने लगी।

रात को जब दोनों गहरी नींद में सो रही थीं, तभी एक मधुर, खनखनाती आवाज़ ने उन्हें जगाया, "रानू! शानू! सो गई क्या?"

दोनों की आँखें खुल गईं। गणेश जी की मूर्ति से एक सुनहरी रोशनी निकल रही थी और वह सजीव होकर मुस्कुरा रहे थे!

"डरो मत," गणेश जी बोले, "मैं तुम्हारा भैया हूँ। तुम दोनों ने मुझे बिना कुछ माँगे, सच्चे दिल से प्यार दिया। लोग तो मुझसे सिर्फ मन्नतें माँगते हैं, पर तुमने मुझे 'अपना' माना। यही अपनापन और प्यार मेरी सबसे बड़ी शक्ति है।"

“भैया!” रानू और शानू ने हँसते हुए कहा।

अगले दिन, दोनों बहनों ने गणेश भैया को अपने बैग में छिपाकर स्कूल ले गईं। लंच ब्रेक में वे कोने में बैठकर उनसे बातें कर रही थीं कि कुछ शरारती लड़के वहाँ आ गए।

"अरे देखो! अपनी 'टेड्डी एलिफेंट' से बातें कर रही हैं!" एक लड़के ने चिढ़ाया।रानू को बहुत गुस्सा आया। "चुप हो जाओ! ये हमारे भाई हैं!" वह बोली।

जब एक लड़के ने आगे बढ़कर रानू के बाल खींचने चाहे, तो शानू ने बिना डरे उसका हाथ पकड़ लिया। उसे लगा जैसे उसके अंदर बिजली-सी दौड़ गई हो। "हमारे भाई को कुछ मत कहो!" उसकी आवाज़ में इतना साहस था कि सारे लड़के घबराकर भाग गए।

गणेशा मुस्कुराए, "वो ताकत तुम्हारे भीतर थी। मैं तुम्हारे अंदर ही तो रहता हूँ।"

दोनों बहनों को अब समझ आया - सच्चा भाई वही है जो हमारे अंदर की अच्छाई, साहस और प्रेम बनकर रहे।

शाम को, जब डैडी को इस बारे में पता चला, तो वे थोड़ा नाराज हुए। उन्होंने मूर्ति को देखते हुए कहा, "अगर तुम में जान है, तो सबके सामने क्यों नहीं बोलते?"

लेकिन मूर्ति चुप रही।

रात को, जब गणेश भैया फिर प्रकट हुए, तो रानू ने पूछा, "भैया, तुमने डैडी के सामने बात क्यों नहीं की?"

गणेश जी मुस्कुराए। "प्यारी बहनो, डैडी मुझे एक मूर्ति की तरह देखते हैं, जो चमत्कार दिखा सके। पर तुम दोनों ने मुझे अपना भाई समझा है। जिस नज़र से तुम मुझे देखते हो, मैं वैसा ही बन जाता हूँ। अगर मैं सबके सामने बोलने लगता, तो यह घर मेले जैसा बन जाता और मुझे फिर से सबकी मन्नतें सुननी पड़तीं। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए बोलता हूँ, क्योंकि तुम्हारा प्यार ही तुमसे मेरा जुड़ाव है।"

गणेशा रोज़ उनसे बातें करते, खेलते, और उन्हें हिम्मत व स्नेह का पाठ पढ़ाते।
एक दिन गणेशा ने कहा, "मूषकराज मुझे लेने आए हैं, अब लौटना होगा। लेकिन याद रखना, जब भी सच्चे मन से बुलाओगी, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

रानू और शानू की आँखों में आँसू थे, पर उनके दिलों में एक नया विश्वास भर चुका था। उन्होंने वादा किया कि वे हमेशा अपने इस 'लिविंग टेड्डी एलिफेंट भैया' को याद रखेंगी - अपने ही अंदर के असीम प्यार और साहस में।